Tazkirae Imaam Ahmed Raza (Hindi)

रिसाला न. 1

मज़ारे आ'ला हज़रत

तज़्किरए इमाम अहमद रज़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

अमीरे अहले सुन्नत का सब से पहला रिसाला

- बचपन की एक हिकायत 04
- हैरत अंगेज़ कुव्वते हाफ़िज़ा 07
- सिर्फ़ एक माह में हिफ़्ज़े कुरआन 08
- बेदारी में दीदारे मुस्तफ़ा 11
- दौराने मीलाद बैठने का अन्दाज़ 14
- सोने का मुन्फ़रिद अन्दाज़ 14
- ट्रेन रुकी रही ! 15
- दरबारे रिसालत में इन्तिज़ार 19

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

मेरी ज़िन्दगी का पहला रिसाला

अज़ : सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنْہُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुझे बचपन ही से आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **से मह़ब्बत हो गई थी। ''तज़्किरए अह़मद रज़ा ब सिल्सिलए यौमे रज़ा'' मेरी ज़िन्दगी का पहला रिसाला है। जो कि मैं ने 25 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1393 हि. (ब मुत़ाबिक़ 31-3-1973) को ''यौमे रज़ा'' के मौक़अ़ पर जारी किया था।** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **इस के बहुत सारे एडीशन शाएअ़ हुए हैं, वक़्तन फ़ वक़्तन इस में तरामीम की हैं, रौज़ए रसूल** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **की याद दिलाने वाले दस्त-ख़त़ भी उन दिनों नहीं थे बा'द में ज़ेहन बना मगर आख़िरी सफ़ह़े पर बत़ौरे यादगार तारीख़ पुरानी रखी है, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मेरी इस काविश को क़बूल फ़रमाए और इस मुख़्तसर से रिसाले को आ़शिक़ाने रसूल के लिये नफ़्अ़ बख़्श बनाए। अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ब तुफ़ैले आ'ला ह़ज़रत मेरी और रिसाले के हर सुन्नी क़ारी की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत करे।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

25 मुह़र्रमुल ह़राम 1433 हि.
21-12-2011

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर ब निय्यते सवाब येह रिसाला (20 सफ़ह़ात) पूरा पढ़ कर अपनी दुन्या व आख़िरत का भला कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शफ़ीए़ उमम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : ''जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस की शफ़ाअ़त फ़रमाऊंगा ।''

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ۲٦۱ مؤسسة الريان بيروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

विलादते बा सआ़दत

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की विलादते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

बा सआ़दत बरेली शरीफ़ के मह़ल्ला जसूली में 10 **शव्वालुल मुकर्रम** 1272 सि.हि. बरोजे़ हफ़्ता ब वक़्ते ज़ोहर मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ई. को हुई । सने पैदाइश के ए'तिबार से आप का नाम **अल मुख़्तार** (1272 हि.) है ।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 58, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

आ'ला ह़ज़रत का सने विलादत

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपना सने विलादत पारह 28 **सू-रतुल मुजा-दलह** की आयत नम्बर 22 से निकाला है । इस आयते करीमा के **इल्मे अब्जद** के ए'तिबार के मुत़ाबिक़ 1272 अ़दद हैं और हिजरी साल के ह़िसाब से येही आप का सने विलादत है । चुनान्चे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत सफ़ह़ा 410 पर है : विलादत की तारीख़ों का ज़िक्र था और इस पर (सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने) इर्शाद फ़रमाया : بِحَمْدِ اللهِ تعالٰی मेरी विलादत की तारीख़ इस आयते करीमा में है :

اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَاَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ

(پ۲۸، المجادلہ:۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से इन की मदद की ।

आप का नामे मुबारक **मुह़म्मद** है और आप के दादा ने **अह़मद रज़ा** कह कर पुकारा और इसी नाम से मश्हूर हुए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हैरत अंगेज़ बचपन

उ़मूमन हर ज़माने के बच्चों का वोही ह़ाल होता है जो आज कल बच्चों का है कि सात आठ साल तक तो उन्हें किसी बात का होश नहीं होता और न ही वोह किसी बात की तह तक पहुंच सकते हैं, मगर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बचपन बड़ी **अहम्मिय्यत** का ह़ामिल था। कमसिनी, ख़ुर्द-साली (या'नी बचपन) और कम उ़म्री में होश मन्दी और क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा का येह आ़लम था कि साढ़े **चार साल** की नन्ही सी उ़म्र में क़ुरआने मजीद नाज़िरा मुकम्मल पढ़ने की ने'मत से बारयाब हो गए। **छ साल** के थे कि रबीउ़ल अव्वल के मुबारक महीने में मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मौज़ूअ़ पर एक बहुत बड़े इज्तिमाअ़ में निहायत पुर मग़्ज़ तक़्रीर फ़रमा कर उ़-लमाए किराम और मशाइख़े इ़ज़ाम से तह़सीन व आफ़रीन की दाद वुसूल की। इसी उ़म्र में आप ने **बग़दाद शरीफ़** के बारे में सम्त मा'लूम कर ली फिर ता दमे ह़यात बल्दए मुबा-र-कए ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم (या'नी ग़ौसे आ'ज़म के मुबारक शहर) की त़रफ़ पाउं न फैलाए। नमाज़ से तो इ़श्क़ की ह़द तक लगाव था चुनान्चे नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला का तह़फ़्फ़ुज़ करते हुए मस्जिद में जा कर अदा फ़रमाया करते, जब कभी किसी ख़ातून का सामना होता तो फ़ौरन नज़रें नीची करते हुए सर झुका लिया करते, गोया कि सुन्नते मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ التَّحِيَّةُ وَالثَّنَاء का आप पर ग़-लबा था जिस का इज़्हार करते हुए हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लिया में यूं सलाम पेश करते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

नीची नज़रों की शर्मो ह़या पर दुरूद

ऊंची बीनी की रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लड़क-पन में तक़्वा को इस क़दर अपना लिया था कि चलते वक़्त क़दमों की आहट तक सुनाई न देती थी । सात साल के थे कि माहे **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़े रखने शुरूअ़ कर दिये । (दीबाचा फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 30, स. 16)

बचपन की एक ह़िकायत

जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बचपन में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को घर पर एक मौलवी साह़िब कुरआने मजीद पढ़ाने आया करते थे । एक रोज़ का ज़िक्र है कि मौलवी साह़िब किसी आयते करीमा में बार बार एक लफ़्ज़ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बताते थे मगर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बाने मुबारक से नहीं निकलता था वोह "ज़बर" बताते थे आप "ज़ेर" पढ़ते थे येह कैफ़िय्यत जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दादाजान ह़ज़रते मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने देखी तो हुज़ूर (या'नी आ'ला ह़ज़रत) को अपने पास बुलाया और कलामे पाक मंगवा कर देखा तो उस में कातिब ने ग़-लती से ज़ेर की जगह ज़बर लिख दिया था, या'नी जो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बान से निकलता था वोह सह़ीह़ था । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दादा ने पूछा कि बेटे जिस त़रह़ मौलवी साह़िब पढ़ाते थे तुम उसी त़रह़ क्यूं नहीं पढ़ते थे ? अ़र्ज़ की : मैं इरादा करता था मगर ज़बान पर क़ाबू न पाता था ।

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ख़ुद फ़रमाते थे कि मेरे उस्ताद जिन से मैं इब्तिदाई किताब पढ़ता था, जब मुझे सबक़ पढ़ा दिया करते, एक दो मर्तबा मैं देख कर किताब बन्द कर देता, जब सबक़ सुनते तो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सुना देता । रोज़ाना येह ह़ालत देख कर सख़्त तअ़ज्जुब करते । एक दिन मुझ से फ़रमाने लगे कि अह़मद मियां ! येह तो कहो तुम आदमी हो या जिन्न ? कि मुझ को पढ़ाते देर लगती है मगर तुम को याद करते देर नहीं लगती ! **आप ने फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र है मैं इन्सान ही हूं हां अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का फ़ज़्लो करम शामिले ह़ाल है ।** (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 68) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पहला फ़तवा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने सिर्फ तेरह साल दस माह चार दिन की उ़म्र में तमाम मुरव्वजा उ़लूम की तक्मील अपने वालिदे माजिद **रईसुल मु-तकल्लिमीन** मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَنَّان से कर के स-नदे फ़राग़त ह़ासिल कर ली । इसी दिन आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने एक सुवाल के जवाब में पहला **फ़तवा** तह़रीर फ़रमाया था । फ़तवा सह़ीह़ पा कर आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के वालिदे माजिद ने मस्नदे इफ़्ता आप رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के सिपुर्द कर दी और आख़िर वक़्त तक फ़तावा तह़रीर

फ़रमाते रहे। (ऐज़न, स. 279) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ'ला हज़रत की रियाज़ी दानी

अल्लाह तआला ने आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बे अन्दाज़ा उ़लूमे जलीला से नवाज़ा था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कमो बेश पचास उ़लूम में क़लम उठाया और क़ाबिले क़द्र कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को हर फ़न में काफ़ी दस्त-रस ह़ासिल थी। इ़ल्मे तौक़ीत में इस क़दर कमाल ह़ासिल था कि दिन को सूरज और रात को सितारे देख कर घड़ी मिला लेते। वक़्त बिल्कुल सहीह़ होता और कभी एक मिनट का भी फ़र्क़ न हुवा। इ़ल्मे रियाज़ी में आप यगानए रूज़गार थे। चुनान्चे अ़लीगढ़ यूनीवर्सिटी के वाइस चान्सलर डॉक्टर ज़ियाउद्दीन जो कि रियाज़ी में ग़ैर मुल्की डिग्रियां और तमग़ा जात ह़ासिल किये हुए थे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में रियाज़ी का एक मस्अला पूछने आए। इर्शाद हुवा : फ़रमाइये ! उन्हों ने कहा : वोह ऐसा मस्अला नहीं जिसे इतनी आसानी से अ़र्ज़ करूं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : कुछ तो फ़रमाइये। वाइस चान्सलर साहिब ने सुवाल पेश किया तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसी वक़्त उस का तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब दे दिया। उन्हों ने इन्तिहाई ह़ैरत से कहा कि मैं इस मस्अले के लिये जर्मन जाना चाहता था इत्तिफ़ाक़न

हमारे दीनियात के प्रोफ़ेसर मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ साहिब ने मेरी राहनुमाई फ़रमाई और मैं यहां ह़ाज़िर हो गया। यूं मा'लूम होता है कि आप इसी मस्अले को किताब में देख रहे थे। डॉक्टर साहिब बसद फ़रह़त व मसर्रत वापस तशरीफ़ ले गए और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शख़्सिय्यत से इस क़दर **मु-तअस्सिर** हुए कि दाढ़ी रख ली और सौम व सलात के पाबन्द हो गए। (ऐज़न, स. 223, 229) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

इलावा अज़ीं मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इ़ल्मे तक्सीर, इ़ल्मे हैअत, इ़ल्मे जफ़्र वग़ैरा में भी काफ़ी महारत रखते थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हैरत अंगेज़ कुव्वते ह़ाफ़िज़ा

ह़ज़रते अबू ह़ामिद सय्यिद मुह़म्मद मुह़द्दिस कछौछवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि जब **दारुल इफ़्ता** में काम करने के सिल्सिले में मेरा बरेली शरीफ़ में क़ियाम था तो रात दिन ऐसे वाक़िआ़त सामने आते थे कि **आ'ला ह़ज़रत की ह़ाज़िर जवाबी** से लोग ह़ैरान हो जाते। इन ह़ाज़िर जवाबियों में ह़ैरत में डाल देने वाले वाक़िआ़त वोह इ़ल्मी **ह़ाज़िर जवाबी** थी जिस की मिसाल सुनी भी नहीं गई। म-सलन इस्तिफ़्ता (सुवाल) आया, **दारुल इफ़्ता** में काम करने वालों ने पढ़ा और ऐसा मा'लूम हुवा कि नई

क़िस्म का हादिसा दरयाफ़्त किया गया (या'नी नए क़िस्म का मुआ़–मला पेश आया है) और जवाब जुज़्इय्या की शक्ल में न मिल सकेगा फ़ु–क़हाए किराम के उसूले आ़म्मा से इस्तिम्बात़ करना पड़ेगा। (या'नी फ़ु–क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के बताए हुए उसूलों से मस्अला निकालना पड़ेगा) आ'ला ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, अ़र्ज़ किया : अ़जब नए नए क़िस्म के सुवालात आ रहे हैं ! अब हम लोग क्या त़रीक़ा इख़्तियार करें ? फ़रमाया : येह तो बड़ा पुराना सुवाल है। इब्ने हुमाम ने "**फ़त्हुल क़दीर**" के फ़ुलां सफ़हे में, इब्ने आ़बिदीन ने "**रद्दुल मुह़तार**" की फ़ुलां जिल्द और फ़ुलां सफ़ह़ा पर (लिखा है), "**फ़तावा हिन्दिय्या**" में, "**ख़ैरिया**" में येह येह इ़बारत साफ़ साफ़ मौजूद है अब जो किताबों को खोला तो **सफ़ह़ा, सत्र और बताई गई इ़बारत** में एक नुक़्ते का फ़र्क़ नहीं। इस ख़ुदादाद फ़ज़्लो कमाल ने उ़–लमा को हमेशा ह़ैरत में रखा। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 210)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

किस त़रह़ इतने इ़ल्म के दरिया बहा दिये
उ़–लमाए ह़क़ की अ़क़्ल तो ह़ैरां है आज भी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिर्फ़ एक माह में ह़िफ़्ज़े क़ुरआन

जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि एक रोज़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद

फ़रमाया कि बा'ज़ ना वाक़िफ़ ह़ज़रात मेरे नाम के आगे **ह़ाफ़िज़** लिख दिया करते हैं, ह़ालां कि मैं इस लक़ब का अह्ल नहीं हूं । सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इसी रोज़ से दौर शुरूअ़ कर दिया जिस का वक़्त ग़ालिबन इशा का वुज़ू फ़रमाने के बा'द से जमाअ़त क़ाइम होने तक मख़्सूस था । रोज़ाना एक पारह याद फ़रमा लिया करते थे, यहां तक कि तीसवें रोज़ तीसवां पारह याद फ़रमा लिया ।

एक मौक़अ़ पर फ़रमाया कि मैं ने कलामे पाक बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह इस लिये कि उन बन्दगाने ख़ुदा का (जो मेरे नाम के आगे ह़ाफ़िज़ लिख दिया करते हैं) कहना ग़लत़ साबित न हो । (ऐज़न, स. 208) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का सर ता पा नुमूना थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ना'तिया दीवान "**ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़**" इस अम्र का शाहिद है । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नोके क़लम बल्कि गहराइये क़ल्ब से निकला हुवा हर मिस्रअ़ा मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बे पायां अ़क़ीदत व **मह़ब्बत** की शहादत देता है । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कभी किसी दुन्यवी ताजदार की ख़ुशामद के लिये क़सीदा नहीं लिखा, इस लिये कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व गु़लामी को दिलो जान से क़बूल कर लिया था । और इस में मर्तबए कमाल को पहुंचे हुए थे, इस का इज़्हार आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शे'र में इस त़रह़ फ़रमाया :

इन्हें जाना इन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल ह़म्द मैं दुन्या से मुसल्मान गया

हुक्काम की ख़ुशामद से इज्तिनाब

एक मर्तबा रियासत नानपारा (ज़िलअ़ बहराइच यूपी हिन्द) के नवाब की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) में शु-अ़रा ने क़साइद लिखे । कुछ लोगों ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से भी गुज़ारिश की, कि ह़ज़रत आप भी नवाब साह़िब की मद्ह़ (ता'रीफ़) में कोई क़सीदा लिख दें । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस के जवाब में एक ना'त शरीफ़ लिखी जिस का मत़्लअ़[1] येह है :

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धूआं नहीं

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : कमाल = पूरा होना । नक़्स = ख़ामी । ख़ार = कांटा

1 : ग़ज़ल या क़सीदे के शुरूअ़ का शे'र जिस के दोनों मिस्रओं में क़ाफ़िये हों वोह **मत़्लअ़** कहलाता है ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (کنزالعمال)

शर्हे कलामे रज़ा : मेरे आक़ा मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हुस्नो जमाल द-र-जए कमाल तक पहुंचता है या'नी हर त़रह़ से कामिल व मुकम्मल है इस में कोई ख़ामी होना तो दूर की बात है, ख़ामी का तसव्वुर तक नहीं हो सकता, हर फूल की शाख़ में कांटे होते हैं मगर गुलशने आमिना का एक येही महक्ता फूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा है जो कांटों से पाक है, हर शम्अ़ में येह ऐ़ब होता है कि वोह धूआं छोड़ती है मगर आप बज़्मे रिसालत की ऐसी रोशन शम्अ़ हैं कि धूएं या'नी हर त़रह़ के ऐ़ब से पाक हैं।

और मक़्त़अ़[1] में "नानपारा" की बन्दिश कितने लत़ीफ़ इशारे में अदा करते हैं :

करूं मद्ह़े अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन "पारए नां" नहीं

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : मद्ह़ = ता'रीफ़। दुवल = दौलत की जम्अ़। पारए नां = रोटी का टुकड़ा

शर्हे कलामे रज़ा : मैं अहले दौलत व सरवत की मद्ह़ सराई या'नी ता'रीफ़ व तौसीफ़ क्यूं करूं ! मैं तो अपने आक़ाए करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के दर का फ़क़ीर हूं। मेरा दीन "पारए नान" नहीं। "नान" का मा'ना रोटी और "पारा"

1 : कलाम का आख़िरी शे'र जिस में शाइ़र का तख़ल्लुस हो वोह **मक़्त़अ़** कहलाता है।

या'नी टुकड़ा । मत़लब येह कि मेरा दीन "रोटी का टुकड़ा" नहीं है कि जिस के लिये मालदारों की ख़ुशामदें करता फिरूं ।

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेदारी में दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه दूसरी बार ह़ज के लिये ह़ाज़िर हुए तो **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا में नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की आरज़ू लिये रौज़ए अत़्हर के सामने देर तक सलातो सलाम पढ़ते रहे, मगर पहली रात क़िस्मत में येह सआ़दत न थी । इस मौक़अ़ पर वोह मा'रूफ़ ना'तिया ग़ज़ल लिखी जिस के मत़्लअ़ में दामने रह़मत से वाबस्तगी की उम्मीद दिखाई है :

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ बहार झूम जा ! कि तुझ पर बहारों की बहार आने वाली है । वोह देख ! मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सूए लालाज़ार या'नी जानिबे गुलज़ार तशरीफ़ ला रहे हैं !

मक़्त़अ़ में बारगाहे रिसालत में अपनी आ़जिज़ी और बे **मा-यगी** (या'नी मिस्कीनी) का नक़्शा यूं खींचा है :

कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा
तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मिस्रए सानी में बत़ौरे आ़जिज़ी अपने लिये "कुत्ते" का लफ़्ज़ इस्ति'माल फ़रमाया है मगर अ-दबन यहां "शैदा" लिखा है)

शर्हे कलामे रज़ा : इस मक्त़अ़ में आ़शिके़ माहे रिसालत सरकारे आ'ला ह़ज़रत कमाले इन्किसारी का इज़्हार करते हुए अपने आप से फ़रमाते हैं : ऐ अह़मद रज़ा ! तू क्या और तेरी ह़क़ीक़त क्या ! तुझ जैसे तो हज़ारों सगाने मदीना गलियों में यूं फिर रहे हैं !

येह ग़ज़ल अ़र्ज़ कर के दीदार के इन्तिज़ार में **मुअद्दब** बैठे हुए थे कि क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और चश्माने सर (या'नी सर की खुली आंखों) से बेदारी में ज़ियारते मह़बूबे बारी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ हुए । (ऐज़न, स. 92) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! कु़रबान जाइये उन आंखों पर कि जो आ़लमे बेदारी में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से शरफ़-याब हुईं । क्यूं न हो कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के अन्दर इ़श्के़ रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कूट कूट कर भरा हुवा था और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **"फ़नाफ़िर्रसूल"** के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ थे । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ना'तिया कलाम इस अम्र का शाहिद है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सीरत की बा'ज़ झल्कियां

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई मेरे दिल के दो टुकड़े कर दे तो एक पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله और दूसरे पर مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) लिखा हुवा पाएगा।

(सवानेहे़ इमाम अह़मद रज़ा, स. 96, मक्तबए नूरिया र-ज़विय्या, सख्खर)

ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "सामाने बख़्शिश" में फ़रमाते हैं :

ख़ुदा एक पर हो तो इक पर मुह़म्मद
अगर क़ल्ब अपना दो पारा करूं मैं

मशाइख़े ज़माना की नज़रों में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वाक़ेई फ़नाफ़िर्रसूल थे। अक्सर फ़िराक़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में ग़मगीन रहते और सर्द आहें भरा करते। पेशावर गुस्ताख़ों की गुस्ताख़ाना इ़बारात को देखते तो आंखों से आंसूओं की झड़ी लग जाती और प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िमायत में गुस्ताख़ों का सख़्ती से रद करते ताकि वोह **झुंझला** कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बुरा कहना और लिखना शुरूअ़ कर दें। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अक्सर इस पर फ़ख़्र किया करते कि बारी तआ़ला ने इस दौर में मुझे नामूसे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ढाल बनाया है। त़रीक़े इस्ति'माल येह है कि बद गोयों का सख़्ती और तेज़ कलामी से रद करता हूं कि इस त़रह़ वोह मुझे बुरा भला कहने में मसरूफ़ हो जाएं। उस वक़्त तक के लिये

आक़ाए दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी करने से बचे रहेंगे। ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा न बस एक जां दो जहां फ़िदा

दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोड़ों जहां नहीं

ग़ु-रबा को कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटाते थे, हमेशा ग़रीबों की इमदाद करते रहते। बल्कि आख़िरी वक़्त भी अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को वसिय्यत की, कि ग़ु-रबा का ख़ास ख़याल रखना। इन को ख़ातिर दारी से अच्छे अच्छे और लज़ीज़ खाने अपने घर से खिलाया करना और किसी ग़रीब को मुत़्लक़ न झिड़क्ना।

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अक्सर तस्नीफ़ व तालीफ़ में लगे रहते। पांचों नमाज़ों के वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर होते और हमेशा नमाज़ बा जमाअ़त अदा फ़रमाया करते, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़ूराक बहुत कम थी।

दौराने मीलाद बैठने का अन्दाज़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ में ज़िक्रे विलादत शरीफ़ के वक़्त सलातो सलाम पढ़ने के लिये खड़े होते बाक़ी शुरूअ़ से आख़िर तक अ-दबन दो ज़ानू बैठे रहते। यूं ही वा'ज़ फ़रमाते, चार पांच घन्टे कामिल दो ज़ानू ही मिम्बर शरीफ़ पर रहते। (ऐज़न, स. 119, ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 98) काश ! हम ग़ुलामाने आ'ला ह़ज़रत को भी तिलावते क़ुरआन करते या सुनते वक़्त नीज़

इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, म-दनी मुज़ा-करात, दर्स व म-दनी ह़ल्क़ों वग़ैरा में अ-दबन दो ज़ानू बैठने की सआ़दत मिल जाए ।

सोने का मुन्फ़रिद अन्दाज़

सोते वक़्त हाथ के अंगूठे को शहादत की उंगली पर रख लेते ताकि उंगलियों से लफ़्ज़ "**अल्लाह (الله)**" बन जाए । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पैर फैला कर कभी न सोते बल्कि दाहिनी (या'नी सीधी) करवट लैट कर दोनों हाथों को मिला कर सर के नीचे रख लेते और पाउं मुबारक समेट लेते, इस त़रह़ जिस्म से लफ़्ज़ "**मुह़म्मद (محمد)**" बन जाता । (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 99 वग़ैरा) येह हैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के चाहने वालों और रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे आ़शिक़ों की अदाएं

नामे ख़ुदा है हाथ में नामे नबी है ज़ात में
मोहरे ग़ुलामी है पड़ी, लिख्खे हुए हैं नाम दो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ट्रेन रुकी रही !

जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक बार पीलीभीत से बरेली शरीफ़ ब ज़रीअ़ए रेल जा रहे थे । रास्ते में नवाब गन्ज के स्टेशन पर जहां गाड़ी सिर्फ़ दो मिनट के लिये ठहरती है, मग़रिब का वक़्त हो चुका था, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने गाड़ी ठहरते ही तक्बीरे इक़ामत फ़रमा

कर गाड़ी के अन्दर ही निय्यत बांध ली, ग़ालिबन पांच शख़्सों ने इक़्तिदा की उन में मैं भी था लेकिन अभी शरीके जमाअ़त नहीं होने पाया था कि मेरी नज़र ग़ैर मुस्लिम गार्ड पर पड़ी जो प्लेट फ़ॉर्म पर खड़ा सब्ज़ झन्डी हिला रहा था, मैं ने खिड़की से झांक कर देखा कि लाइन क्लियर थी और गाड़ी छूट रही थी, मगर गाड़ी न चली और हुज़ूर आ'ला ह़ज़रत ने ब इत़्मीनाने तमाम बिला किसी इज़्तिराब के तीनों फ़र्ज़ रक्अ़तें अदा कीं और जिस वक़्त दाईं जानिब सलाम फैरा था गाड़ी चल दी। मुक़्तदियों की ज़बान से बे साख़्ता سُبْحٰنَ اللہ سُبْحٰنَ اللہ سُبْحٰنَ اللہ निकल गया। इस **करामत** में क़ाबिले ग़ौर येह बात थी कि अगर जमाअ़त प्लेट फ़ॉर्म पर खड़ी होती तो येह कहा जा सकता था कि गार्ड ने एक बुज़ुर्ग हस्ती को देख कर गाड़ी रोक ली होगी ऐसा न था बल्कि नमाज़ गाड़ी के अन्दर पढ़ी थी। इस थोड़े वक़्त में गार्ड को क्या ख़बर हो सकती थी कि एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बन्दा फ़रीज़ए नमाज़ गाड़ी में अदा करता है। (ऐज़न, जि. 3, स. 189, 190)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वोह कि उस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
वोह कि उस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्ह़े कलामे रज़ा : जो कोई सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार हुवा मख़्लूक़े

परवर दगार उस की इत़ाअ़त गुज़ार हो गई और जो कोई दरबारे हु़ज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर हुवा वोह बारगाहे रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ से भी दूर हो गया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तसानीफ़

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर कमो बेश एक हज़ार किताबें लिखी हैं। यूं तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने 1286 सि.हि. से 1340 सि.हि. तक लाखों फ़तवे दिये होंगे, लेकिन अफ़्सोस ! कि सब नक़्ल न किये जा सके, जो नक़्ल कर लिये गए थे उन का नाम **''अल अ़त़ायन्न-बविय्यह फ़िल फ़तावर्र-ज़विय्यह''** रखा गया। **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुख़र्रजा) की 30 जिल्दें हैं जिन के कुल सफ़ह़ात : 21656, कुल सुवालात व जवाबात : 6847 और कुल रसाइल : 206 हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 30, स. 10, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

क़ुरआन व ह़दीस, फ़िक़्ह, मन्तिक़ और कलाम वग़ैरा में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वुस्अ़ते न-ज़री का अन्दाज़ा आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़तावा के मुत़ा-लए से ही हो सकता है। क्यूं कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हर फ़तवे में दलाइल का समुन्दर मोज-ज़न है। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सात रसाइल के नाम मुला-ह़ज़ा हों :

﴾1﴿ **''सुब्ह़ानुस्सुब्बूह़ अ़न ऐ़बि किज़्बिन मक़्बूह़''** सच्चे ख़ुदा पर झूट का बोहतान बांधने वालों के रद में येह रिसाला तह़रीर फ़रमाया

जिस ने मुख़ालिफ़ीन के दम तोड़ दिये और क़लम निचोड़ दिये ﴿2﴾ **मक़ामिउ़ल ह़दीद** ﴿3﴾ **अल अम्नु वल उ़ला** ﴿4﴾ **तजल्लियुल यक़ीन** ﴿5﴾ **अल कौ-क-बतुश्शहाबियह** ﴿6﴾ **सल्लुस्सुयूफ़िल हिन्दिय्यह** ﴿7﴾ **ह़यातुल मवात।**

इ़ल्म का चश्मा हुवा है मोज-ज़न तह़रीर में

जब क़लम तूने उठाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 536)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तर-ज-मए कुरआने करीम

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कुरआने करीम का तरजमा किया जो उर्दू के मौजूदा तराजिम में सब पर फ़ाइक़ (या'नी फ़ौक़िय्यत रखता) है। तरजमे का नाम "**कन्ज़ुल ईमान**" है जिस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ा ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बनामे "ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान" और **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने "नूरुल इ़रफ़ान" के नाम से ह़ाशिया लिखा है।

वफ़ाते ह़सरत आयात

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी वफ़ात से **4** माह **22** दिन पहले ख़ुद अपने विसाल की ख़बर दे कर पारह 29 **सू-रतुद्दह्र** की आयत 15 से साले इन्तिक़ाल का **इस्तिख़्राज** फ़रमा दिया था।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

इस आयते शरीफ़ा के **इल्मे अब्जद** के ह़िसाब से 1340 अ़दद बनते हैं और येही हिजरी साल के ए'तिबार से सने वफ़ात है। वोह आयते मुबारका येह है :

وَ یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِاٰنِیَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ (پ۲۹، الدھر:۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन पर चांदी के बरतनों और कूज़ों का दौर होगा।

(सवानेहे़ इमाम अह़मद रज़ा, स. 384)

25 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1340 हि. मुत़ाबिक़ 28 अक्तूबर 1921 ई. को **जुमुअ़तुल मुबारक** के दिन हिन्दूस्तान के वक़्त के मुत़ाबिक़ 2 बज कर 38 मिनट (और पाकिस्तानी वक़्त के मुत़ाबिक़ 2 बज कर 8 मिनट) पर, ऐ़न अज़ाने जुमुआ़ के वक़्त हुवा। **आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ै़रो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने दाइये अजल को **लब्बैक** कहा। اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْن ० आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का मज़ारे पुर अन्वार मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ में आज भी ज़ियारत गाहे ख़ा़सो आ़म है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तुम क्या गए कि रौनक़े मह़फ़िल चली गई

शे'रो अदब की ज़ुल्फ़ परेशां है आज भी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दरबारे रिसालत में इन्तिज़ार

25 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** को बैतुल मुक़द्दस में एक शामी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़्वाब में अपने आप को दरबारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में पाया । सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان दरबार में ह़ाज़िर थे, लेकिन मजलिस में सुकूत त़ारी था और ऐसा मा'लूम होता था कि किसी आने वाले का इन्तिज़ार है, शामी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों किस का इन्तिज़ार है ? सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **हमें अह़मद रज़ा का इन्तिज़ार है ।** शामी बुज़ुर्ग ने अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! अह़मद रज़ा कौन हैं ? इर्शाद हुवा : हिन्दूस्तान में बरेली के बाशिन्दे हैं । बेदारी के बा'द वोह शामी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मौलाना अह़मद रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तलाश में हिन्दूस्तान की त़रफ़ चल पड़े और जब वोह बरेली शरीफ़ आए तो उन्हें मा'लूम हुवा कि इस आ़शिक़े रसूल का उसी रोज़ (या'नी **25 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340** हि.) को विसाल हो चुका है । जिस रोज़ उन्हों ने ख़्वाब में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह कहते सुना था कि ''हमें अह़मद रज़ा का इन्तिज़ार है ।'' (सवानेहे़ इमाम

अह़मद रज़ा, स. 391) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदारे इश्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सगे ग़ौसो रज़ा

मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنْہُ

हफ़्ता 25 स-फ़रुलमुज़फ़्फ़र 1393 हि.

(ब मुत़ाबिक़ 31-3-1973)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। إن شاء الله عزوجل''** अपनी इस्लाह़ के लिये **''नेक आ'माल''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। إن شاء الله عزوجل